संस्कृत,पालि एवं प्राकृत विभाग
हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय
पंचदिवसीया सन्धिकार्यशाला
(19 मई से 23 मई, 2025)

प्रतिवेदन पत्र-

प्रथम दिन-

उद्घाटन समारोह के अनन्तर डॉ जयकृष्ण महोदय के द्वारा सभी को सन्धि का सामान्य परिचय करवाया गया तथा श्रीमद्भगवद्गीता में सन्धि पदों का वर्णन एवं विश्लेषण किया गया । सन्धिसम्बन्धी इस कार्यशाला में सभी प्रतिभागियों को अध्ययन-किट (टिप्पणी पुस्तिका, लेखनी, सन्धि सम्बन्धी पुस्तक एवं श्रीमद्भगवद्गीता) दिया गया। तद्नन्तर यण् सन्धि का विशेष अध्यापन हुआ है और विद्यार्थियों को गीता के प्रथम अध्याय से यण् सन्धि के उदाहरणों का अन्वेषण करने का गृहकार्य दिया गया। (उद्घाटन समारोह का विवरण संलग्न)

द्वितीय दिन-

प्रथम दिन पढ़ाए गए विषयों का सिंहावलोकन हुआ तथा द्वितीय दिन सूत्रसहित एवं अनेकों उदाहरणों को प्रस्तुत करते हुए अयादि सन्धि का पाठ डॉ जयकृष्ण महोदय ने करवाया। यण् और अयादि सन्धि के मूल्यांकन हेतु अभ्यास पत्र दिए गए जिसे प्रतिभगियों को करके लाने का कार्य दिया गया। इस अभ्यास पत्र में सन्धि करना तथा सन्धि-विच्छेद दोनों से सम्बन्धित प्रश्न थे।

तृतीय दिन-

तृतीय दिवस, गतदिवस दिए गए अभ्यास पत्र का मूल्यांकन करके प्रतिभागियों द्वारा प्राप्त अंक के आधार पर उन्हें ज्येष्ठ वर्ग और कनिष्ठ वर्ग में विभाजित किया गया। तदनन्तर सवर्णदीर्घ सन्धि, गुणसन्धि, वृद्धिसन्धि का अध्यापन हुआ और पुनः प्रतिभागियों को अभ्यासपत्र वितरित किए गए जिसमें तृतीय दिन पढ़ाये गए विषय से सबन्धित अभ्यासप्रश्न थे तथा भगवद्गीता के प्रथम व द्वितीय अध्याय के श्लोकों से सन्धियों के विश्लेषण का कार्य दिया गया।

~~चतुर्थ दिन-~~

चतुर्थ दिन-

चतुर्थ दिन, गतदिवस दिए गए अभ्यासपत्र का मूल्यांकन हुआ तथा प्रतिभागियों के संशयों का निराकरण किया गया। ज्येष्ठ वर्ग और कनिष्ठ वर्ग में विभाजित प्रतिभागियों का सत्र पृथक् से चालित हुआ। चतुर्थ दिवस व्यंजन सन्धि के 12 भेदों में से श्चुत्वसन्धि,ष्टुत्वसन्धि, जश्त्वसन्धि,चर्त्वसन्धि, अनुनासिकसन्धि, अनुस्वारसन्धि, का अध्यापन हुआ तथा प्रतिभागियों को अभ्यासपत्र दिये गये और पुनः गीता के अध्यायों से पढ़ाए गए उक्त सन्धियों को ढूढकर लाने का कार्य दिया गया।

पञ्चम दिन-

सन्ध्यानुप्रयोग कार्यशाला का अन्तिम एवं पाँचवाँ दिन समापन सत्र के रूप में रहा जिसमें शेष पाठ 'विसर्गसन्धि' का अध्यापन हुआ है। इसमें उदाहरण एवं अनुप्रयोगों के द्वारा इसको विधिवत सुलभतापूर्वक प्रतिभागियों को सिखाया एवं समझाया गया। इसके अनन्तर पूर्वोक्त सन्धियों में आए कुछ पाणिनीसूत्रों का भी पाठ हुआ जिसमें उनकी व्याख्या भी की गई। इसमें सन्धि एवं उनके अनुप्रयोगों से सम्बन्धित संशयों एवं प्रश्नों का भी निराकरण किया गया।

(समापन समारोह का विवरण संलग्न)

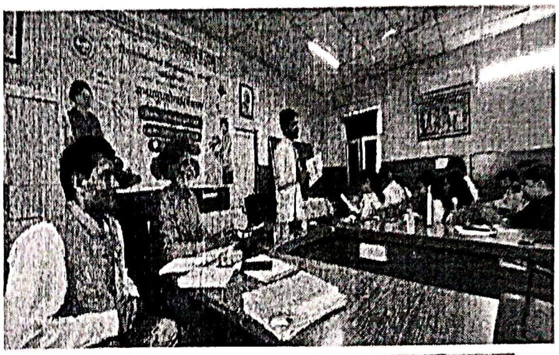

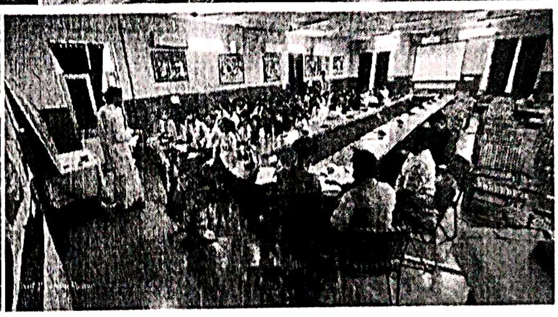

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Himachal Pradesh
(Accredited by NAAC with 'A+' Grade with CGPA of 3.42)
विभाग का नाम : संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग

आज़ादी का अमृत महोत्सव

दिनांक: 16.05.2025

कार्यालय आदेश

संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग में पंच दिवसीय संधि अनुप्रयोग कार्यशाला का आयोजन दिनांक :19.05.2025-23.05.2025 तक होना सुनिश्चित हुई है | इस कार्यशाला के सुचारू संचालन हेतु संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग की विभागीय समिति का गठन किया जाता है | जिसके सदस्य निम्नानुसार है :

क्र. सं.	प्राध्यापकों के नाम	पदनाम
1	प्रो. बृहस्पति मिश्र	संयोजक
2	डॉ. अर्चना कुमारी	सह-संयोजक
3	डॉ. एन वैति सुब्रमणियन	सह-संयोजक

उक्त समिति सदस्यों को निर्देशित किया जाता है कि उक्त कार्यशाला में विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन सुचारू रूप से करना सुनिश्चित करेंगे | इस कार्यशाला हेतु यहीं समिति क्रय समिति का कार्य निर्वहन कर क्रय विवरण प्रमाणित कर प्रस्तुत करेगी |

16-5-25
विभागाध्यक्ष,
संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग

प्रति:

1. सम्बन्धित समिति सदस्यों के सूचनार्थ |

फाइल सं :SKT/2-2/CUHP/15/2049

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Himachal Pradesh
(Accredited by NAAC with 'A+' Grade with CGPA of 3.42)
विभाग का नाम :संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग

आज़ादी का अमृत महोत्सव

दिनांक: 16.05.2025

सूचना

संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग के सभी विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों को सूचित किया जाता है कि संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग द्वारा पंच दिवसीय कार्यशाला का आयोजन दिनांक:19.05.204 से 23.05.2025 तक पूर्वाह्न 11:00 बजे से अपराह्न 1:00 बजे तक हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय के धौलाधार परिसर -1 के सभागार कक्ष में होनी सुनिश्चित हुई है|

अत: संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग के सभी विद्यार्थी एवं शोधार्थी उक्त कार्यशाला में अनिवार्य रूप से अपनी उपस्थिति सुनिश्चित करेंगे |

16-5-25

विभागाध्यक्ष,
संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग

फाइल सं :SKT/1-8/CUHP/21/2048

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय

Central University of Himachal Pradesh

(Accredited by NAAC with 'A+' Grade with CGPA of 3.42)

विभाग का नाम :संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग

आज़ादी का अमृत महोत्सव

दिनांक: 16.05.2025

सूचना

संस्कृत,पालि एवं प्राकृत विभाग में पंच दिवसीय संधि अनुप्रयोग कार्यशाला का आयोजन दिनांक :19.05.2025-23.05.2025 तक होना सुनिश्चित हुई है| उक्त कार्यक्रम के सुचारू संचालन के चलते विभाग की समय –सारणी में निम्नानुसार परिवर्तन किया जाता है |

प्रथम कक्षा	द्वितीय कक्षा	कार्यशाला	तृतीय कक्षा	चतुर्थ कक्षा	पंचम कक्षा	षष्ठ कक्षा	सप्तम कक्षा	अष्टकक्षा
9:30AM-10:15AM	10:15 AM-11:AM	11:AM-01:PM	01:PM-1:45 PM	1:45 PM – 2:30 M	2:30 PM-3:15PM	3:15PM-4:00 PM	4:00PM-4:45 PM	4:45PM-5:30 PM

अत: सभी प्राध्यापक और विद्यार्थी उक्त समय-सारणी के अनुसार कक्षा और कार्यक्रम में अपनी उस्थिति सुनिश्चित करेंगे |

16-5-25

विभागाध्यक्ष,

संस्कृत, पालि एवं प्राकृत विभाग

सन्ध्यनुप्रयोगकार्यशाला 19.5.25 – 23.5.25
उद्घाटनसमारोह - 19.5.25 11:00 बजे से

कार्यक्रम प्रतिवेदन

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा सन्ध्यनुप्रयोगकार्यशाला सन्धियों अनुप्रयोगात्मक पञ्चदिवसीय कार्यशाला 19 मई 2025 से 23 मई 2025 तक आयोजन किया जा रहा है । इस कार्यशाला का उद्घाटन समारोह 19.5.2025 को 11:30 बजे किया गया । इस उद्घाटनसमारोह में मुख्यातिथि के रूप में प्रो.प्रदीप कुमार जी अधिष्ठाता अकादमिक उपस्थित हो के शोभा बढाया । कार्यक्रम के अध्यक्षता श्रीमान् प्रताप जी ने निर्वहन किया तथा इस कार्यशाला का समन्वयक संस्कृत विभाग के अध्यक्ष प्रो. योगेंद्र कुमार जी थे । प्रो. बृहस्पति मिश्र जी कार्यशाला के संयोजक रहे तथा सहसंयोजक डॉ.ना.वैति सुब्रह्मणियन जी तथा सहसंयोजिका डॉ. अर्चना कुमारी जी थे । उद्घाटनकार्यक्रम के मञ्चसञ्चालन का दायित्व डॉ.ना.वैति सुब्रह्मणियन ने किया ।

मुख्यातिथि का सम्मान प्रो. योगेन्द्र कुमार जी संस्कृत विभाग के अध्यक्ष जी ने नारिकेल तथा पादप अर्पण के द्वारा किया । कार्यक्रम के अध्यक्ष प्रताप जी का सम्मान प्रो. बृहस्पति मिश्र जी ने नारिकेल तथा पादप अर्पण के द्वारा किया । विषयविशेषज्ञ विद्वान् डॉ. जयकृष्ण शर्मा महोदय का सम्मान विभाग के प्राध्यापिका इस कार्यशाला के सहसंयोजिका नारिकेल तथा पादप अर्पण के द्वारा डॉ. अर्चना कुमारी जी ने किया । विभागाध्यक्ष जी की सम्मान विभाग के प्राध्यापक डॉ. भजहरि दास जी ने किया अतिथियों के सम्मान के पश्चात् अतिथियों का स्वागत तथा परिचय एवं कार्यशाला का उद्देश्य और महत्त्व के बारे में कार्यशाला के संयोजक प्रो. बृहस्पति मिश्र जी ने विस्तार से समझाया ।

तत्पश्चात् कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो.प्रदीप कुमार जी ने संस्कृत भाषा इतर भाषाओं से अतिविशाल है इसकी शब्द भण्डार अति विशाल है इस भाषा का व्याकरण बहुत ही दृढ और उन्नत है । इस भाषा का व्याकरण का अत्यन्त प्रारम्भिक विषय सन्धियों का ज्ञान होना अनिवार्य है इस विषय का अनुप्रयोगात्मक कार्यशाला संस्कृत विभाग से किया जा रहा है अति प्रशंसनीय है और उन्होंने छात्रों को यह भी उद्बोधन किया की वो श्रद्धा से इस कार्यशाला में अन्वय हो के अध्ययन करें और जयकृष्ण शर्म जी सदृश विद्वान् के मुखारविन्द से सन्धियों के विविध आयामों को सुचार रूप से जान लें । कार्यक्रम के अध्यक्ष श्रीमान् प्रताप जी ने सन्धियों का महत्त्व बताया । तत्पश्चात् कार्यशाला के समन्वयक प्रो. योगेन्द्र कुमार जी ने भी सन्धियों का महत्त्व बताते हुए इस कार्यशाला के ओयोजन के लिए हर एक कक्षाओं से 15 मिनट स्वीकार कर के दो घण्टे का अवसर प्राप्त कर के किया जा रहा है ताकि सत्रान्त परीक्षा के लिए कक्षाओं भी बाधित न हो । सौभाग्य से डॉ. जयकृष्ण शर्मा जी सदृश विद्वान् हमें उपलब्ध हुए तो इस सदवसर को कठिन परिश्रम कर के सार्थक कर लें तथा सारे अतिथियों का विषयविशेषज्ञों को धन्यवाद ज्ञापन किए । धन्यवादज्ञापन के पश्चात् राष्ट्रगीत से उद्घाटन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ ।

कार्यक्रम का विवरण अधो निर्दिष्ट है -

19.05.25 सन्ध्यनुप्रयोगकार्यशाला - कार्यक्रमस्य स्वरूपम्

उद्घाटनकार्यक्रमसंयोजक: मञ्चसञ्चालनम् - डॉ.ना.वैतिसुब्रह्मणियन

क्र.सं.	कार्यक्रमस्वरूपम्	आचरितुः नाम
1.	दीपप्रज्वलनम् (अतिथिभिः) दीपमन्त्रः	ईशागणः
2.	वैदिकं मङ्गलम्	ज्योतिगणः
3.	सरस्वतीवन्दना	मोहितगणः
4.	अतिथीनां सपर्या (चत्वारः) 1. प्रो.प्रदीपकुमार शर्म महोदयः, अधिष्ठाता अकादमिक (मुख्यातिथिः) 2. श्रीमान् प्रताप जी, कार्यक्रमाध्यक्षः विषयविशेषज्ञः च 3. डॉ.जयकृष्ण शर्म महोदयः, राज.सं.म.वि . चम्बा (विषयविशेषज्ञः) 4. प्रो.योगेन्द्रकुमार महोदयः (विभागाध्यक्षः)	(नारिकेल, पुष्पाधानी प्रदानेन) 1. प्रो.योगेन्द्रकुमार महोदयः (विभागाध्यक्षः) 2. प्रो. बृहस्पतिमिश्र महोदयः (कार्यशालासंयोजकः) 3. डॉ.अर्चना कुमारी महोदयः 4. डॉ.भजहरिदास महोदयः
5.	स्वागतभाषणं विषयोपस्थापनम्	प्रो. बृहस्पतिः मिश्रः महोदयः (कार्यशालासंयोजकः)
6.	मुख्यातिथिभाषणम्	प्रो.प्रदीपकुमार शर्म महोदयः
7.	धन्यवादभाषणम्	डॉ.अर्चना कुमारी महोदयया
8.	अतिथयः निर्गच्छन्ति। छात्राः तत्रैव कक्षायाम् उपविशन्ति। पुस्तकादिसामग्रीवितरणम्। उपस्थितिस्वीकरणम्।	

हिमाचलप्रदेशकेन्द्रीयविश्वविद्यालयः,धर्मशाला
संस्कृतविभागः
आन्तरिक गुणवत्ता सुनिश्चयन प्रकोष्ठ द्वारा
सन्ध्यनुप्रयोगकार्यशाला
दिनाङ्कः - 19 - 23 .05. 25
उद्घाटनसमारोहः
19.05.2025 - 11:00 वादनतः
प्रो.सत प्रकाश बंसलः
प्रो. योगेन्द्र कुमारः
श्रीमान् प्रताप जी
डॉ.जयकृष्णशर्मा
प्रो.प्रदीपकुमारः
प्रो. बृहस्पतिमिश्रः

Prof. Yogendra Kumar

Prof. Yogendra Kumar

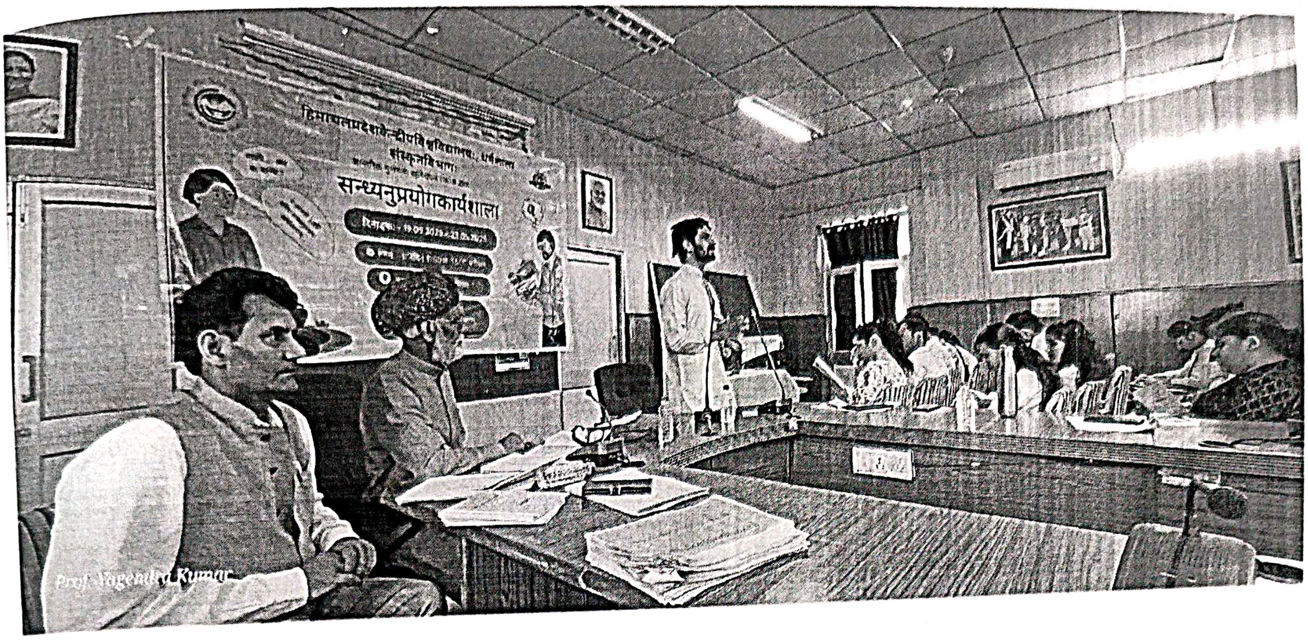
सन्ध्यनुप्रयोगकार्यशाला
Prof. Yogendra Kumar

Prof. Yogendra Kumar

सन्ध्यनुप्रयोगकार्यशाला 19.5.25 – 23.5.25
समापनसमारोह - 23.5.25 11:00 बजे से

कार्यक्रम प्रतिवेदन

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग द्वारा "सन्धि अनुप्रयोग कार्यशाला" के अन्तर्गत **सन्धियों के अनुप्रयोगात्मक अध्ययन पर आधारित पञ्चदिवसीय कार्यशाला** का आयोजन **19 मई 2025 से 23 मई 2025** तक किया गया।

इस कार्यशाला का **समापन समारोह** दिनाङ्क **23.05.2025 को प्रातः 11:00** बजे प्रारम्भ हुआ। समारोह में **मुख्य अतिथि** के रूप में **प्रो. सत प्रकाश बंसल** (माननीय कुलपति महोदय), **सारस्वत अतिथि** के रूप में **प्रो. प्रदीप कुमार** (अधिष्ठाता, अकादमिक), तथा **विशिष्ट अतिथि** के रूप में **प्रो. रोशन लाल शर्मा** जी की गरिमामयी उपस्थिति रही, जिन्होंने समारोह की शोभा बढ़ाई।

इस अवसर पर **विषय विशेषज्ञ श्रीमान् प्रताप** जी एवं **डॉ. जयकृष्ण जी सम्मानित अतिथि** के रूप में समारोह को सुशोभित किया।

समापन कार्यक्रम का **मंच संचालन डॉ. ना. वैति सुब्रह्मणियन** जी द्वारा सुचारु रूप से किया गया।

❖ **सम्मान समारोह**

- **मुख्य अतिथि प्रो. सत प्रकाश बंसल** जी का सम्मान संस्कृत विभागाध्यक्ष **प्रो. योगेन्द्र कुमार** जी द्वारा **नारिकेल एवं पादप अर्पण** के माध्यम से किया गया।
- **सारस्वत अतिथि प्रो. प्रदीप कुमार** जी का सम्मान **प्रो. बृहस्पति मिश्र** जी ने नारिकेल एवं पादप अर्पण द्वारा किया।
- **विशिष्ट अतिथि प्रो. रोशन लाल शर्मा** जी का सम्मान **डॉ. रणजीत कुमार** जी ने किया।
- **विषय विशेषज्ञ डॉ. जयकृष्ण शर्मा** जी का सम्मान कार्यशाला की **सह-संयोजिका डॉ. अर्चना कुमारी** जी ने किया।
- **श्रीमान् प्रताप** जी का सम्मान **डॉ. विवेक शर्मा** जी द्वारा किया गया।

सम्मान समारोह के पश्चात्, **प्रो. योगेन्द्र कुमार** जी ने **अतिथियों का स्वागत, परिचय,** तथा **कार्यशाला के उद्देश्य और महत्व** पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला।

❖ **उद्बोधन एवं आशीर्वचन**

- **विशिष्ट अतिथि प्रो. रोशन लाल शर्मा** जी ने अभ्यास आधारित इस कार्यशाला की प्रशंसा करते हुए संस्कृत विभाग की गतिविधियों की सराहना की।
- **सारस्वत अतिथि प्रो. प्रदीप कुमार** जी ने कहा कि संस्कृत भाषा का व्याकरण अत्यंत दृढ़ और समृद्ध है। उन्होंने 'एकाकी', 'एकांकी' जैसे शब्दों के उदाहरण द्वारा बताया कि कैसे सन्धि जैसे व्याकरणिक विषयों के अभ्यास से शब्दार्थ में परिवर्तन आता है। उन्होंने कार्यशाला के सफल आयोजन हेतु शुभकामनाएं प्रकट कीं।
- **मुख्य अतिथि प्रो. सत प्रकाश बंसल जी** ने कार्यशाला की सफलता के लिए आशीर्वाद एवं बधाई दी। उन्होंने यह भी निर्देशित किया कि विश्वविद्यालय द्वारा स्वीकृत गाँवों में **दैनंदिन व्यवहार में संस्कृत भाषा** का

प्रयोग हो, तथा **संस्कृत पुस्तकों की रचना** एवं **अन्तर्जाल संसाधनों के प्रयोग** हेतु विभाग के सभी प्राध्यापकों तथा छात्रों को प्रेरित किया जाए। उन्होंने **संस्कृत आधारित तकनीकी संसाधनों के निर्माण** की दिशा में कार्य करने का भी सुझाव दिया।

- मुख्यातिथि के वक्तव्य के उपरान्त प्रो. बृहस्पति मिश्र जी ने धन्यवादज्ञापन करते हुए कहा कि **संस्कृत** भाषा में **सन्धियों का ज्ञान प्रारम्भिक स्तर से प्रौढ स्तर तक आवश्यक होता है। सन्धि अनुप्रयोग कार्यशाला** के संयोजक के रूप में सभी सहयोगियों का तथा **विषय विशेषज्ञ श्रीमान् प्रताप** जी एवं **डॉ. जयकृष्ण जी का** और समागत सभी अतिथियों को धन्यवादज्ञापन किया। तदनन्तर राष्ट्रगीत से समापन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम का विवरण अधो निर्दिष्ट –

23.05.25 सन्ध्यनुप्रयोगकार्यशाला - कार्यक्रमस्य स्वरूपम्

समापनकार्यक्रमसंयोजकः मञ्चसञ्चालनम् - डॉ.ना.वैतिसुब्रह्मणियन

क्र.सं.	कार्यक्रमस्वरूपम्	आचरितुः नाम
1.	दीपप्रज्वलनम् (अतिथिभिः) वैदिकं मङ्गलम्	कनिकागणः (दीपमन्त्रः)
	अतिथीनां सपर्या (चत्वारः) (नारिकेल, पादप प्रदानेन)	
2.	1. प्रो. सत प्रकाश बंसलः, माननीयकुलपतिः (मुख्यातिथिः) 2. प्रो. प्रदीपकुमार शर्म महोदयः, अधिष्ठाता अकादमिक (सारस्वतातिथिः) 3. प्रो. रोशन लाल शर्म महोदयः, भाषासंकायाध्यक्षः (विशिष्टातिथिः) 4. डॉ.जयकृष्ण शर्म महोदयः, राज.सं.म.वि . चम्बा। (विषयविशेषज्ञः) 5. श्रीमान् प्रताप जी, प्रख्यातशिक्षाविद्, (विषयविशेषज्ञः)	1. प्रो. योगेन्द्रकुमार (विभागाध्यक्षः) 2. प्रो. बृहस्पतिः मिश्रः (संयोजकः) 3. डॉ. रणजीत कुमार 4. डॉ. अर्चना कुमारी 5. डॉ.विवेकशर्मा
3.	स्वागतभाषणं विद्वत्परिचयः च	प्रो. योगेन्द्रकुमार (विभागाध्यक्षः)
4.	विशिष्टातिथिभाषणम्	प्रो.रोशन लाल शर्म महोदय
5.	सारस्वतातिथिभाषणम्	प्रो. प्रदीपकुमार महोदय
6.	मुख्यातिथिभाषणम्	प्रो. सत प्रकाश बंसलः महोदय
7.	धन्यवादभाषणम्	प्रो. बृहस्पतिः मिश्रः (संयोजकः)
8.	राष्ट्रगीतम्	

हिमाचलप्रदेशकेन्द्रीयविश्वविद्यालयः, धर्मशाला, हि.प्र.
A+ NAAC
संस्कृतविभागः
आन्तरिक गुणवत्ता सुनिश्चयन प्रकोष्ठ द्वारा
सन्ध्यनुप्रयोगकार्यशाला
समापनसमारोहः
23.05.25, 10:30 वादने
स्थानम् - सभागारम्, धौलाधार परिसरः-1
डॉ.जयकृष्णशर्मा
विषयविशेषज्ञः, सहायकाचार्यः, राज.संस्कृतमहाविद्यालयः,चम्बा
श्रीमान् प्रताप जी
विषयविशेषज्ञः
प्रख्यातशिक्षाविद्
प्रो.प्रदीपकुमारः
सारस्वतातिथिः
अधिष्ठाता अकादमिक
हि.प्र.के.वि.वि
प्रो. सत प्रकाश बंसल
मुख्यातिथिः संरक्षकश्च
माननीय कुलपतिः
हि.प्र.के.वि.वि
प्रो. रोशनलाल शर्मा
विशिष्टातिथिः
भाषासंकायाध्यक्षः
हि.प्र.के.वि.वि
प्रो. योगेन्द्र कुमारः
विभागाध्यक्षः, संस्कृत विभागः
हि.प्र.के.वि.वि
प्रो.बृहस्पतिमिश्रः
कार्यशाला-संयोजकः
संस्कृत विभागः

Prof. Yogendra Kumar

GLOBUS

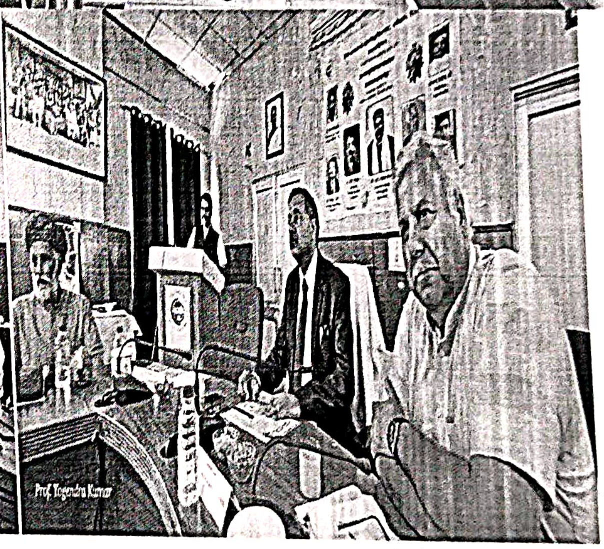
Prof. Yogendra Kumar

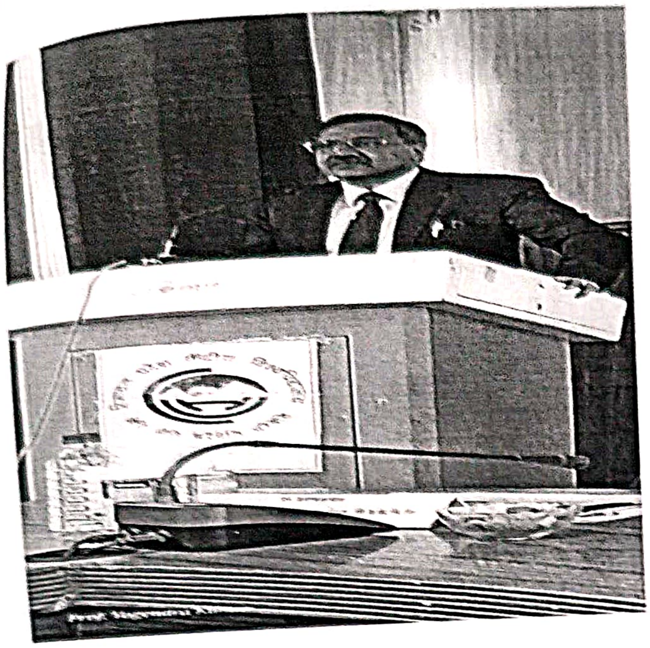

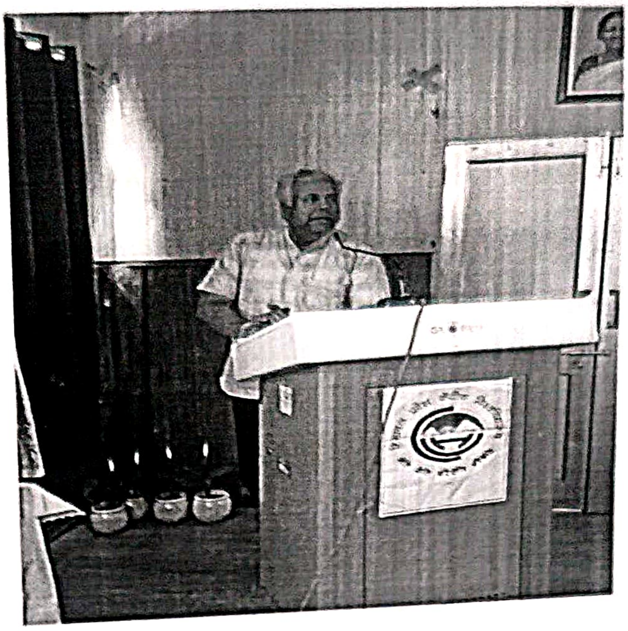

संस्कृत व्याकरण की सरल पुस्तकों का प्रकाशन करवाएगा विवि : प्रो. बंसल

वरिष्ठ संवाददाता ▮ धर्मशाला

हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विवि के संस्कृत विभाग की ओर से सद्धप्रयोग कार्यशाला संधियों अनुप्रयोगात्मक षष्ठ दिवसीय कार्यशाला का समापन धौलाधार परिसर में किया गया।

इस समापन समारोह में बतौर मुख्यअतिथि प्रो. सत प्रकाश बंसल, सारस्वत अतिथि के रूप में प्रो. प्रदीप कुमार अधिष्ठाता अकादमिक, विशिष्ट अतिथि के रूप में प्रो. रोशन लाल शर्मा मौजूद रहे। वहीं कार्यशाला में दोनों विषय विशेषज्ञ सामाजिक कार्यकर्ता प्रताप तथा डॉ. यजकृष्ण भी उपस्थित रहे। समापन कार्यक्रम के मंच संचालन का दायित्व डॉ. ना. वैति सुब्रह्मणियन ने निभाया।

इस मौके पर बतौर मुख्यअतिथि कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल इस कार्यशाला के सफल आयोजन के लिए संस्कृत विभाग को बधाई दी और आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करने के लिए उचित दिशा-निर्देश भी प्रदान किए। उन्होंने स्पष्ट रूप से विभाग के सभी प्राध्यापकों से आग्रह किया कि वह संस्कृत एवं एआई के मध्य समन्वय स्थापित करने हेतु कार्य करें, जो भी संस्कृत भाषा की दृष्टि से उपयोग करने योग्य तकनीक या एप्लीकेशंस हैं, उनका अधिकाधिक प्रयोग करना विद्यार्थियों को सिखाएं। इसी के साथ उन्होंने सर्व समाज के लिए उपयोगी संस्कृत भाषा और व्याकरण से संबंधित पुस्तकों को लेखन एवं विवि द्वारा उनके प्रकाशन के लिए उचित निर्देश प्रदान किए।

उन्होंने कहा कि संस्कृत भाषा जिस प्रकार से भी समाज के लिए उपयोगी सिद्ध हो ऐसा उपाय संस्कृत विभाग द्वारा किया जाना चाहिए, यह भाषा भारतीय ज्ञान परंपरा की मूल स्रोत है। अतः संस्कृत विभाग के विद्यार्थियों तथा प्राध्यापकों को विशेष परिश्रम करने की आवश्यकता है।

संस्कृत व्याकरण की सरल पुस्तकों का प्रकाशन करवाएगा केंद्रीय विवि

- संस्कृत विभाग के विद्यार्थियों तथा प्राध्यापकों को विशेष परिश्रम करने की आवश्यकता
- केंद्रीय विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग की पांच दिवसीय कार्यशाला के समापन पर बोले कुलपति

जागरण संवाददाता, धर्मशाला : हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग की ओर से आयोजित कार्यशाला का समापन धौलाधार परिसर एक में हुआ। समापन समारोह में बतौर मुख्यातिथि प्रो.सत प्रकाश बंसल ने शिरकत की। प्रो. प्रदीप कुमार ने कहा कि संस्कृत भाषा का व्याकरण बहुत ही दृढ़ और उन्नत हैं।।

कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करने के लिए उचित दिशा-निर्देश प्रदान किए। उन्होंने विभाग के सभी प्राध्यापकों से आग्रह किया कि वह संस्कृत एवं एआइ के मध्य समन्वय स्थापित करने के लिए कार्य करें। जो भी संस्कृत भाषा की दृष्टि से उपयोग करने योग्य तकनीक या एप्लीकेशंस हैं, उनका अधिकाधिक प्रयोग करना विद्यार्थियों को सिखाएं। उन्होंने सर्व समाज के लिए उपयोगी संस्कृत भाषा और व्याकरण से संबंधित पुस्तकों की लेखन एवं विश्वविद्यालय द्वारा उनके प्रकाशन के लिए उचित निर्देश प्रदान किए। केंद्रीय विश्वविद्यालय संस्कृत व्याकरण की सरल, पुस्तकों का प्रकाशन करवाएगा।उन्होंने कहा कि संस्कृत भाषा जिस प्रकार से भी समाज के लिए उपयोगी सिद्ध हो, ऐसा उपाय संस्कृत विभाग के द्वारा किया जाना चाहिए। यह भाषा भारतीय ज्ञान परंपरा की मूल स्रोत है। अतः संस्कृत विभाग के विद्यार्थियों तथा प्राध्यापकों को विशेष परिश्रम करने की आवश्यकता है, जिससे हमारी प्राचीन ज्ञान निधि समाज के सामने आ सके।

कार्यक्रम में सारस्वत अतिथि के रूप में प्रो. प्रदीप कुमार अधिष्ठाता अकादमिक, विशिष्ठ अतिथि के रूप में प्रो. रोशन लाल शर्मा मौजूद रहे। समापन कार्यक्रम के मंच संचालन का दायित्व डा. ना. वैति सुब्रह्मणियन ने निभाया। विभागाध्यक्ष प्रो. योगेन्द्रकुमार ने सभी का स्वागत किया। कार्यशाला के संयोजक प्रो. ब्रहस्पति मिश्रा रहे।

संस्कृत विभाग की संध्यनुप्रयोग कार्यशाला का समापन

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग की ओर से संध्यनुप्रयोग कार्यशाला संधियों अनुप्रयोगात्मक दिवसीय कार्यशाला का समापन धौलाधार परिसर एक में हुआ। इस समापन समारोह में बतौर मुख्यातिथि प्रो. सत प्रकाश बंसल, सारस्वत अतिथि के रूप में प्रो. प्रदीप कुमार अधिष्ठाता अकादमिक, विशिष्ठ अतिथि के रूप में प्रो. रोशन लाल शर्मा मौजूद रहे। वहीं कार्यशाला में दोनों विषय विशेषज्ञ सामाजिक कार्यकर्ता प्रताप तथा डा. यजकृष्ण भी उपस्थित रहे। समापन कार्यक्रम के मंच संचालन का दायित्व डा. ना. वैति सुब्रह्मणियन ने निभाया। दीप प्रज्जवलन के साथ कार्यक्रम का आगाज हुआ। कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने सर्व समाज के लिए उपयोगी संस्कृत भाषा और व्याकरण से संबंधित पुस्तकों की लेखन एवं विश्वविद्यालय द्वारा उनके प्रकाशन के लिए उचित निर्देश प्रदान किए।

संस्कृत व्याकरण की सरल पुस्तकों का प्रकाशन करवाएगा सीयू : प्रो. बंसल

धर्मशाला। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय (सीयू) संस्कृत व्याकरण की सरल पुस्तकों का प्रकाशन करवाएगा। यह एलान सीयू के कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल ने किया। उन्होंने यह बात विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग की ओर से कार्यशाला के समापन पर धर्मशाला में बच्चों को संबोधित करते हुए कही। उन्होंने विभाग के सभी प्राध्यापकों से आग्रह किया कि संस्कृत एवं एआई के मध्य समन्वय स्थापित करने के लिए कार्य करें। जो भी संस्कृत भाषा की दृष्टि से उपयोग करने योग्य तकनीक या एप्लीकेशंस हैं, उनका अधिकाधिक प्रयोग करना विद्यार्थियों को सिखाएं। ब्यूरो

संस्कृत व्याकरण की सरल पुस्तकों का प्रकाशन करवाएगा विश्वविद्यालय : प्रो. बंसल

धर्मशाला, (आपका फैसला)। हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग की ओर से सन्ध्यनुप्रयोग कार्यशाला सन्धियों अनुप्रयोगात्मक षष्ठ दिवसीय कार्यशाला का समापन धौलाधार परिसर एक में हुआ। इस समापन समारोह में बतौर मुख्यातिथि प्रो.सत प्रकाश बंसल, सारस्वत अतिथि के रूप में प्रो. प्रदीप कुमार अधिष्ठाता अकादमिक, विशिष्ठ अतिथि के रूप में प्रो. रोशन लाल शर्मा मौजूद रहे। वहीं कार्यशाला में दोनों विषय विशेषज्ञ सामाजिक कार्यकर्ता प्रताप तथा डॉ. यजकृष्ण भी उपस्थित रहे। समापन कार्यक्रम के मंच संचालन का दायित्व डॉ. ना. वैति सुब्रह्मणियन ने निभाया। दीप प्रज्ज्वलन के साथ कार्यक्रम का आगाज हुआ। विभागाध्यक्ष प्रो. योगेन्द्रकुमार ने सभी का स्वागत किया। कार्यशाला के संयोजक प्रो. बृहस्पति मिश्रा रहे। मुख्यातिथि का सम्मान विभागाध्यक्ष प्रो. योगेंद्र कुमार द्वारा किया। वहीं सारस्वतातिथि प्रो. प्रदीप कुमार का सम्मान प्रो. बृहस्पति मिश्रा ने, विशिष्ट अतिथि प्रो. रोशन लाल शर्मा का सम्मान डॉ. रणजीत कुमार ने, विषय विशेषज्ञ विद्वान् जयकृष्ण शर्मा का सम्मान कार्यशाला की सहसंयोजिका डॉ. अर्चना द्वारा और समाजिक कार्यकर्ता प्रताप का सम्मान प्राध्यापक डॉ. विवेक शर्मा ने किया। सारस्वत अतिथि प्रो. प्रदीप कुमार ने कहा कि संस्कृत भाषा का व्याकरण बहुत ही दृढ और उन्नत है। एकाकी एकांकी, जैसे शब्दों में व्याकरण के दृष्टि से शब्द के अर्थ को बदल देने वाले मुख्य व्याकरण विषयों के बारे में बताते हुए, इसी तरह व्याकरण में सन्धि विषयों को अभ्यास के रूप में जानने के लिए आयोजित षष्ठ दिनात्मक अनुप्रयोगात्मक कार्यशाला का सफलतापूर्वक सम्पन्न होने के लिए शुभकामनाएँ दिए। इस मौके पर बतौर मुख्यातिथि कुलपति प्रो. सत प्रकाश बंसल इस कार्यशाला के सफल आयोजन के लिए संस्कृत विभाग को बधाई दी और आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करने हेतु उचित दिशा-निर्देश भी प्रदान किए। उन्होंने स्पष्ट रूप से विभाग के सभी प्राध्यापकों से आग्रह किया कि वह संस्कृत एवं उर्दू के मध्य समन्वय स्थापित करने हेतु कार्य करें। जो भी संस्कृत भाषा की दृष्टि से उपयोग करने योग्य तकनीक या एप्लीकेशंस हैं, उनका अधिकाधिक प्रयोग करना विद्यार्थियों को सिखाएं। इसी के साथ उन्होंने सर्व समाज के लिए उपयोगी संस्कृत भाषा और व्याकरण से संबंधित पुस्तकों की लेखन एवं विश्वविद्यालय द्वारा उनके प्रकाशन के लिए उचित निर्देश प्रदान किए। उन्होंने कहा कि संस्कृत भाषा जिस प्रकार से भी समाज के लिए उपयोगी सिद्ध हो ऐसा उपाय संस्कृत विभाग के द्वारा किया जाना चाहिए, यह भाषा भारतीय ज्ञान परंपरा की मूल स्रोत है। अतः संस्कृत विभाग के विद्यार्थियों तथा प्राध्यापकों को विशेष परिश्रम करने की आवश्यकता है। जिससे हमारी प्राचीन ज्ञान निधि समाज के सामने आ सके। अन्त में कुलपति ने भारतीय ज्ञान परंपरा की दृष्टि को ध्यान में रखते हुए विशेष परिश्रम करने हेतु सभी को प्रेरित किया।